



सुबह-सुबह हमारे गुरु और हृदि के या शायद भारत के महान संपादक प्रभाष जोशी का फोन आया। पहले तो उन्होंने यही पूछा कि कहां गायब हो। लेकिन वे जल्दी ही मुद्दे पर आ गए। मुद्दा यह है कि अखबारों की ईमानदारी का क्या आलम है और लोकसभा चुनाव के दौरान खबरों को छापने के लिए अखबारों ने जो नरिलज्ज धंधा किया है, उसके लिए क्या उन्हें माफ कर देना चाहिए? प्रभाषजी हालांकि इंटरनेट पर बहुत नहीं जाते। उन्होंने कई बार अखबारों जैसे टाइम्स ऑफ इंडिया, अमर उजाला और दैनिक जागरण आदि के नाम ले कर खुलेआम लिखा और जगह-जगह बोला कि इन लोगों ने अपना ईमान बेचा है।

इन अखबारों ने अपने उस पाठकों के मूर्ख बनाया है जो उनके पन्नों पर छपे हर शब्द पर भरोसा करते हैं और पैसा दे कर अखबार खरीदते हैं। प्रभाष जी को बताया गया था कि इंटरनेट पर बहुत धुआंधार बहस उनके बयानों को ले कर छड़ी गई थी और अब तक छड़ी हुई है। उस बहस में मैं भी शामिल था इसलिए उन्होंने मुझसे बात की। गुस्से में लिखे हुए कवाक्य के लिए झां भी लगाई। फिर उन्होंने कहा कि नेट भारत में अभी दो प्रतिशत से ज्यादा लोगों के पास नहीं पहुंचा है और नेट का कोई समाज नहीं है इसलिए मुख्यधारा यानी अखबारों में यह बहस होनी चाहिए।

प्रभाष जी पूज्य हैं और सारा जीवन पत्रकारिता के ईमानदार और क हद तक आत्मघाती सरोकारों से जुड़े रहे हैं इसलिए पत्रकारिता के साथ हो रहे द्रोह पर उनकी चिंता और आक्रोश में मैं उनके साथ हूँ। लाखों और लोग भी हैं। लेकिन जहां तक भारत में नेट का समाज नहीं होने की बात है, वहां मैं अपने गुरु से वनिमृतापूर्वक असहमत होने की आज्ञा चाहता हूँ। भारत में इंटरनेट का समाज आज लगभग उतना ही विकसित है जितना छपे हुए अखबारों और पत्रकारों का। प्रभाष जी ने अगर क शब्द लिखा या बोला तो नेट के तमाम ब्लॉग और वेबसाइट पर हर शब्द के जवाब में हजारों लाखों शब्द लिखे गए। गुनाहगार अखबारों के भाई मीरासियों ने प्रभाष जी और उनके सरोकार के साथ जुड़े वालों को केसा और आरोप भी लगाया कि प्रभाष जी सठिया गए हैं और अपनी भक्ति इस नक्कल रहे हैं। प्रभाष जी को इन अल्लू पल्लू लोगों के बयानों से कोई फर्क नहीं पता। वे हृदि पत्रकारिता के महानायक हैं।

मगर जहां तक नेट का समाज नहीं होने की बात है, वहां नेट से रोजी रोटी चलाने के कारण मैं कुछ तथ्य उनके सामने पेश करना चाहता हूँ। ब्लॉगर और वर्ल्ड प्रेस नाम की दो मुफ्त ब्लॉगिंग सेवाओं के जरूरत भारत में ही करीब नौ लाख ब्लॉग बने हैं और उनमें से तीन लाख हृदि में हैं। क ब्लॉग के क दिन में ज्यादा नहीं, अगर दस लोग भी पढ़ें तो तीन करोड़ का समाज तो ये हो गया। पत्रकारिता से जुड़ी भक्ति 4 मीडिया वेबसाइट पर रोज लाखों लोग आते हैं। वहां क भी खबर छपती है तो असम से ले कर केचीन तक से ई-मेल और फोन आने लगते हैं। हमारी डेटलाइन इंडिया पर अब तक रोज का आंकड़ा 50 हजार पाठकों का है। यह किसी भी अखबार के क संस्करण के पाठकों से ज्यादा है। क वेब सेवा है। लेक्सा। वहां जा कर किसी भी वेबसाइट का नाम टाइप कीजिए तो आपके पता चल जाएगा कि प्रतिदिन, प्रति सप्ताह और पछिले तीन महीने में कितने लोगों ने किसी वेबसाइट को देखा। नेट के समाज की क खासियत यह है कि इसमें पूंजी बहुत कम लगती है। जब मैं दस हजार रुपए हों तो आप अपनी कम चलाऊ वेबसाइट विकसित कर सकते हैं। गूगल के अलावा केमली नामक कई वजिजापन सेवा हैं जो ब्लॉग और वेबसाइटों को वजिजापन देती हैं। करोड़ों रुपए लगा कर शुरु की गई टीवी चैनल और बहुत तामझाम से चलने वाले बार अखबार भी इंटरनेट पर आ गए हैं और अब इंटरनेट का समाज सिर्फ भारत में कम से कम बीस करोड़ लोगों का समाज बन चुका है।

